एवं समस्या को हल करने

(सीनियर कंसल्टेंट, नेत्र रोग)

बाल कविता

ये सड़कें

लंबी-चौड़ी ऊंची-नीची दूर तक भागती,
कहीं आबाद, कहीं वीरान, कभी निष्ठुर, कभी दयावान,
असीमित, अपरिचित, गतिवान ये सड़कें,
कहीं किसी पूंजीपति की अल्हड़-अल्हड़,
किशोरी सी तेजस्वनि, स्निग्ध, चंचल, मदमस्त,
बेलगाम, बलखाती भागती ये सड़कें।
कभी नई नवेली दुल्हन सी,
फूलों की भीनी-भीनी सुगंध से नहाई,
कुम्भलाती, शर्माती, टिमटिमाते, जुगनुओं के पल्लू में सजी,
एक डगर से दूसरे डगर की ओर बढ़ती ये सड़कें।
कहीं वक्त से पहले बूढ़ी होती अपनी आबरू को,
कंक्रीट व तारकोल के भद्दे पैबंद से ढकती,
घुसखोर ठेकेदारों और दलालों को,
अपनी हालत का जिम्मेवार बताती ये सड़कें।
कहीं बढ़ती उम्र की मारी जिस्म पे
हजार चोटों के जख्म से कहराती,
लाइलाज समस्याओं से जूझती,
किसी बूढ़ी लावारिस मां जैसी,
तिरस्कृत, उपेक्षित, निष्कासित,
अपनी मौत की अस्वीकृत प्रार्थना करती अभागी ये सड़कें,
रिश्तों को आयाम देती हैं से सड़कें,
जब साया भी साथ छोड़ जाता है,
तब भी कदमों का आधार बनती हैं से सड़कें,
तभी तो पांव के छालों की टीस से लेकर,
लग्जरी गाड़ियों की स्पीड की गवाह बनती है ये सड़कें,
फिर क्यों उपेक्षा, अपमान व बेईमानी का शिकार बनके,
जगह-जगह अपने दुर्भाग्य पर, रोती हुई मिलती हैं से सड़कें॥

राना जैदी, वैशाली, गाजियाबाद, उ.प्र.